

अप्रियं भ्रातृव्यमन्तिरिच्येत TBR. 1, 2, 5, 3, 4, 5, 1. ÇAT. BR. 1, 9, 1, 18. पञ्चमानस्य अग्र्यम् 3, 9, 3, 34. 11, 1, 2, 5. KĀTH. 26, 4. KĀTJ. ÇR. 25, 13, 17.

— आ überlassen: स सुन्वत इन्द्रः सूर्यमा देवो रिण्यस्तर्थाय स्तुवान् RV. 2, 19, 5. AV. 18, 3, 41. — Vgl. अरिच. — caus. 1) den Athem entlassen: अरिच्य Verz. d. Oxf. H. 234, b, 35. — 2) अरिचित in Verbindung mit भू so v. a. verzogen (= एकैकाशो निवर्तिता MALLIN.) KUMĀRAS. 3, 5. MĀLATĪM. 68, 9. DAÇAK. 78, 2.

— उद् med. pass. hinausreichen über, hervorragen, vorzüglicher sein als: उत्सृज्यद्विरिचि कृष्टिषु शर्वः RV. 1, 102, 7. उद्विस्वस्य रिच्यते ऽशः 7, 32, 12. ममैवाद्विच्यते जन्म — तव जन्मनः MBH. 1, 3070. उत्तरोत्तरमेतेभ्यो वर्षमुद्विच्यते गुणैः 6, 234. उद्विक्त hinausreichend über (acc.): शिखरैः खमिवोद्विक्तैः R. GORR. 2, 103, 4. überschüssig, übermässig, im Uebermaass vorhanden, überflüssig, übrig TS. 7, 3, 20, 1. ĀÇV. ÇR. 2, 7, 21. MBH. 14, 1064. fg. Suçr. 1, 81, 6. 2, 373, 18. ०म-मथा KATHAS. 94, 52. MĀRK. P. 48, 5. ०रसान्गुडादीन् KULL. zu M. 2, 177. DAÇAK. 152, 1. अनुद्विक्तावनूना MĀRK. P. 46, 5. अनुद्विक्त (पुर = शरीर) nirgends ein Uebermaass zeigend MBH. 14, 987. तमसोद्विक्तः im Uebermaass versehen mit MĀRK. P. 17, 10. रसोद्विक्तः VP. bei Muir, ST. I, 22. वलोद्विक्त überlegen an, reichlicher versehen mit MBH. 1, 5543. सवोद्विक्त im Uebermaass versehen mit RĀGA-TAR. 3, 343. VP. bei Muir, ST. I, 22. MĀRK. P. 17, 6, 43, 48. सद्वावोद्विक्तचित् PAKĀR. 1, 6, 12. तद्वानोद्विक्तया भक्त्या gesteigert durch Buāg. P. 4, 13, 47. उद्विक्तचेतस् hochsinnig KATHAS. 32, 73. उद्विक्तचित् hochmüthig 91, 55. उद्विक्त dass. MBH. 5, 7044. Spr. 3246, v. l. — Vgl. उद्वेक. — caus. steigern: अधिकोद्विचिताभिष्यम् adv. RĀGA-TAR. 5, 365. — Vgl. उद्वेक.

— समुद्, partic. समुद्विक्त im Uebermaass versehen mit (instr.) VP. bei Muir, ST. I, 22.

— नि s. निरेक.

— प्र med. pass. hinausreichen, hervorragen über: दिवश्चिति प्र रिचिचे महितम् RV. 1, 39, 5. 61, 9. 109, 6. 164, 25. तं तान्मं च प्रति चासि ममनामे प्र चं देव रिच्यते 2, 1, 15. 22, 2. 3, 6, 2. प्र मात्रामो रिचिचे रोचमानः 46, 3. 6, 24, 3. 30, 1. 7, 42, 3. प्र हि रिचित्तो ब्रह्मा देवो अतैभ्यस्परि 8, 77, 5. 10, 32, 5. TS. 7, 3, 20, 1. — Vgl. प्ररिचान्, प्ररेक fg. — caus. übriglassen: पितो नारिरेचीत्किं च न प्र RV. 6, 20, 4. lassen: प्रिया यमस्तन्वं प्रारिरेचीत् 10, 13, 4.

— वि med. pass. 1) hinausreichen: अतश्चिदस्य महिमा विरिचि RV. 4, 16, 5. — 2) Durchfall bekommen: यः सोमं पीत्वा कर्दपेन विरिच्येत वा LĀTJ. 8, 10, 9. विरिक्त der seinen Leib entleert hat M. 5, 144. Suçr. 2, 326, 20. — Vgl. विरेक. — caus. leeren, leer machen: काशमस्य विरेचय MBH. 12, 3920. laziren, ausputzen Suçr. 4, 44, 13. 150, 19. 2, 174, 13. शिरः 16. विरेच्य als Erkl. von निर्यात्य von sich gegeben habend NĪLAK. zu HARIV. 4013. — Vgl. विरेचक fg.

रिञ्, रैजते (भर्जने) VOP. in DĀTUP. 6, 19.

रिटि vgl. u. भृङ्गि. WILSON nach ÇABDĀNTHAK.: the crackling or roaring of flame; a musical instrument; black salt.

रिणीनगर n. N. pr. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 114, a, No. 177.

रिपव्, रिपवति (गती) DĀTUP. 13, 86.

रित् adj. etwa entrinnend (von 1. रिः nach SĀJ. = गन्ती): यदिन्द्रो

अन्यद्विजितो मुहुरिपो वर्षतमः RV. 6, 37, 4.

रिद्ध adj. reif (Korn) H. 1183. — Vgl. मृद्ध.

रिधम m. 1) Frühling. — 2) Liebe Viçva im ÇKDR.

1. रिप् (= लिप्) 1) schmieren, kleben: यद्वा स्वैरो स्वर्धितो रिप्तमस्ति RV. 1, 162, 8. — 2) anschmieren so v. a. betriegen: कित्वासो यद्विरिपुर्न दीवि RV. 5, 83, 8.

— अपि, partic. ०रिप्त verklebt so v. a. erblindet: पुवं कावाया-पिरिप्ताय चतुः प्रत्यधत्तम् RV. 1, 118, 7. पुवं कावाय नामत्यापिरिप्ताय कृम्ये । शश्वद्दृतीर्दशस्यथः 8, 3, 23.

2. रिप् (= 1. रिप्) f. 1) Betrug, Kniff; concret Betrüger: मा नो गुह्या रिपे अपिारकन्दम् RV. 2, 32, 2. न देनाति तं रिपेः 7, 32, 12. अयं वेदि होत्राभिर्जित रिपेः 60, 9. ये वा रिपो दधिरे देवे अघरे 104, 18. Vgl. पतिरिप्, welches demnach den Gatten täuschend bedeutet. — 2) nach NAIKH. 1, 1 (रिपः) und Comm. so v. a. Erde: पाति प्रियं रिपो अयं पदं वेः पाति यद्विशरणं सूर्यस्य RV. 3, 3, 5. ससं न पक्वमविद्वक्चतं रिर्हिक्तासं रिप उपत्ये घतः 10, 79, 3.

रिपुं (von 1. रिप्) UNĀDIS. 1, 27. 1) adj. betrüglich, verrätherisch; m. Betrüger, Schelm; später Widersacher, Feind NAIKH. 3, 24 (= स्तेन). AK. 2, 8, 1, 10. H. 728. HALĀJ. 2, 300. RV. 1, 36, 16. दिप्सन्त इन्द्रिपवो नाहं देभुः 147, 3. 148, 5. 2, 23, 16. पाशा रिपवे विचिताः 27, 16, 34, 9. मा सव्युर्दत्तं रिपोर्मेम fulscher Freund 4, 3, 13. स्तेना अद्विपवो जनासः 5, 3, 11. नैत्रा स्तेनं यत्रा रिपुं तपाति सूरौ अर्चिषा 79, 9. 7, 104, 10. 6, 31, 7. 13. डुरत्येत रिपवे मर्त्याय 7, 63, 3. 8, 11, 4. 22, 14. 23, 15. 10, 183, 2. AV. 19, 49, 9. न कूटैरायुधैर्ह्ययुध्यमानो रणे रिपून् Feinde M. 7, 90. 98. 171. 183. 186. 200. ०निपातिन् MBH. 3, 2492. 12, 4275. ०सूदन R. 1, 32, 8. Suçr. 1, 108, 10. वलवति रिपो वा मुहुरि वा Spr. 309. लोभान्न चान्यो ऽस्ति रिपुः पृथिव्याम् 1137. वलेन किं यश्च रिपून् बाधते 1301. न कश्चित्कस्यचिन्मित्रं न कश्चित्कस्यचिद्रिपुः । कारणादेव ज्ञायते मित्राणि रिपवस्तथा ॥ 1344. ०रक्त 2634. आत्मैव ह्यात्मनो मित्रमात्मैव रिपुरात्मनः 3703. भुजो-च्छ्रिरिपु RAGH. 2, 23. ०भय Gefahr von Seiten des Feindes VARĀH. BRH. S. 53, 86. 119. ०वल ein feindliches Heer 74, 3. ०प्र 79, 12. ०रुन् (०रुण MBH. 10, 620) 101, 13. 104, 23. ०वशल 79, 24. ०नागकुलात्तक RĀGA-TAR. 1, 89. शक्र ० MBH. 3, 11912. क्रौञ्च ० Spr. 64; vgl. H. 10 (wo die v. l. रिपु st. अरि hat) und मदन ०, मधु ०. In der Astrol. ein feindlicher Planet VARĀH. BRH. S. 69, 6. — 2) m. Bez. des 6ten astrologischen Hauses: रिपुगते गुरौ VARĀH. BRH. S. 104, 28. BRH. 7, 14. 9, 4. LAGHŪ. 1, 15. ०भवन n. dass. VARĀH. BRH. S. 104, 15. ०भाव m. dass. Verz. d. B. H. No. 878. ०स्थान n. dass. Verz. d. Oxf. H. 330, a, 2 v. u. — 3) m. N. pr. eines Sohnes des Çlishṭi HARIV. 68. fg. VP. 98. des Jadu Buāg. P. 9, 23, 20.

रिपुघातिन् 1) adj. den Feind schlagend. — 2) f. ०घातिनी eine best. Schlingpflanze ÇABDAK. im ÇKDR. Abrus precatorius WILSON.

रिपुवय 1) adj. den Feind bestiegend: वरूनां चैव सन्नानां समवायो रिपुवयः Spr. 4623. आख्यान Buāg. P. 6, 13, 23. — 2) m. N. pr. verschiedener Fürsten, = दिवोदास Verz. d. Oxf. H. 70, a, 21. ein Sohn Çlishṭi's HARIV. 68. VP. 98. Suvira's Buāg. P. 9, 21, 29. Viçvaḡit's und letzter Fürst der Bārhadhratha 22, 47. VP. 463.

रिपुता f. das Feindsein: रिपुतामुपैति wird zum Feinde Spr. 383.

रिपुमह m. N. pr. eines Fürsten ÇATR. 1, 222. 2, 660.